Abhijyot international Journal
A Global Platform for Quality Original and Ethical Research
Volume (1) Issue (1) April 2026 *ISSN: XXXX-XXXX*
Acceptance: 01/05/2026 **DOI: 10.5281/zenodo.20297614** **Publication: 06/05/2026**

मुंशी प्रेमचंद: यथार्थवाद और संवेदनशील कथाकार

रजनीश कुमार

शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर, बिहार

शोध-सार: मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे महान कथाकार हैं, जिन्होंने भारतीय समाज के यथार्थ को अपनी रचनाओं में न केवल सजीव रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि सामाजिक अन्याय, शोषण, जातीय भेदभाव, स्त्री-विमर्श और ग्रामीण जीवन की पीड़ाओं को भी संवेदनशीलता से उजागर किया। प्रेमचंद के उपन्यास और कहानियाँ एक ओर जहाँ सामाजिक संरचनाओं की विद्रूपताओं को उजागर करती हैं, वहीं दूसरी ओर मानवीय मूल्यों, करुणा और नैतिक संघर्षों की प्रस्तुति के माध्यम से सुधार की प्रेरणा भी देती हैं। प्रेमचंद का यथार्थवाद केवल घटनाओं का चित्रण नहीं, बल्कि उस सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और नैतिक चेतना का प्रतिनिधित्व है, जो तत्कालीन भारतीय समाज के भीतर सघन रूप से व्याप्त थी। उन्होंने दलितों, स्त्रियों, किसानों और श्रमिक वर्ग के माध्यम से भारतीय समाज की परतों को उजागर किया और अपने पात्रों को जीवंत, संघर्षशील तथा संवेदनशील बनाया। यह शोधपत्र प्रेमचंद की प्रमुख रचनाओं — जैसे गोदान, सेवासदन, निर्मला, सद्गति, आदि — के माध्यम से उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण और सामाजिक चेतना का विश्लेषण करता है। साथ ही यह अध्ययन प्रेमचंद को भारतीय साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद का प्रवर्तक सिद्ध करता है, जिनकी रचनाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी अपने समय में थीं।

मुख्य शब्द : मुंशी प्रेमचंद, यथार्थवाद, सामाजिक चेतना,ग्रामीण जीवन, दलित चेतना, शोषण, नैतिक संघर्ष, हिंदी साहित्य।

यथार्थवाद की परिभाषा और प्रेमचंद की दृष्टि

यथार्थवाद का अर्थ है – जीवन के अनुभवों को बिना अलंकरण और आदर्शीकरण के यथासंभव वस्तुपरक रूप में प्रस्तुत करना। साहित्य में यथार्थवाद का उद्देश्य समाज की सच्चाई को उजागर करना होता है, ताकि पाठक उससे जुड़ सकें और उसमें सुधार की संभावनाएँ खोजी जा सकें। प्रेमचंद के लेखन में यथार्थवाद केवल शैली नहीं, बल्कि जीवनदृष्टि है। वे स्वयं कहते हैं – "साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, वरन् समाज को जागरूक बनाना और उसे दिशा देना है।" प्रेमचंद का साहित्यिक विकास उस युग में हुआ जब भारत उपनिवेशवाद, सामाजिक कुरीतियों, जातिवाद, स्त्री-शोषण, और आर्थिक विषमता से जूझ रहा था। गाँधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम ने नई चेतना जगाई थी। इन परिवेशीय परिस्थितियों ने प्रेमचंद के विचारों और लेखन को गहराई से प्रभावित किया। उनका लेखन न तो केवल मनोरंजन है, न ही शुद्ध कलात्मकता – यह सामाजिक चिंतन, मानवीय करुणा और परिवर्तन की आकांक्षा का साहित्य है।

प्रेमचंद की प्रमुख रचनाओं में यथार्थ:

गोदान (१९३६): प्रेमचंद का अंतिम और सर्वाधिक चर्चित उपन्यास 'गोदान' भारतीय ग्रामीण जीवन का महाकाव्य कहा जाता है। होरी एक सामान्य किसान है जो गाय के लिए तरसता है, गोदान उसका सपना है, जो अंततः अधूरा ही रह जाता है। इसमें भूमि-समस्या, किसानों का शोषण, वर्ग-संघर्ष, स्त्री जीवन, ब्राह्मणवाद जैसे मुद्दों को अत्यंत यथार्थपरक ढंग से चित्रित किया गया है। "गोदान" हिंदी साहित्य का वह शिखर उपन्यास है, जो न केवल कथा-कौशल और पात्रों की बहुलता

के कारण महत्वपूर्ण है, बल्कि इसलिए भी कि इसमें भारतीय समाज के यथार्थ को जितनी गहराई, व्यापकता और बहुआयामी दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है, वह हिंदी उपन्यास परंपरा में अद्वितीय है। यह उपन्यास किसान जीवन, शहरी मध्यवर्ग, जाति व्यवस्था, स्त्री-संघर्ष, पूंजी और श्रम के अंतर्विरोध – सबको एक साथ समेटकर एक समाजशास्त्रीय महाकाव्य का रूप लेता है। होरी एक आदर्शवादी किसान है, जो अपने आदर्शों के विरुद्ध जाकर भी सामाजिक स्वीकृति को सर्वोपरि मानता है। उसका पुत्र गोबर विद्रोही है – वह प्रेमचंद के यथार्थवादी सुधारवादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधि है।

गोदान' का केंद्रीय पात्र होरी एक साधारण किसान है, जिसकी सबसे बड़ी आकांक्षा एक गाय का स्वामित्व है — जो भारतीय ग्रामीण संस्कृति में धर्म, सम्पन्नता और प्रतिष्ठा का प्रतीक है। किन्तु यह सपना ही उसके जीवन का अभिशाप बन जाता है। कहानी में होरी, धनिया, गोबर, झुनिया, राय साहब, मिस मालती, डॉ. मेहता, खन्ना आदि विविध सामाजिक वर्गों के पात्र हैं – जो ग्रामीण और शहरी यथार्थ की दो समानांतर रेखाएं बनाते हैं।
प्रेमचंद ग्रामीण भारत की भूमिहीनता, शोषण, जातिवाद, अंधविश्वास, और स्त्री-पीड़ा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं: होरी एक छोटा किसान होते हुए भी धार्मिक कर्तव्यों (गोदान) और सामाजिक मर्यादाओं के बोझ तले दबा रहता है। गाँव का पंचायती ढाॅंचा पूरी तरह ब्राह्मणवादी और शोषणकारी है – जहाँ जाति का मूल्य इंसानियत से ऊपर है। झुनिया का बहिष्कार और बाद में धनिया का साहस प्रेमचंद के स्त्री यथार्थ को उभारते हैं। होरी धर्म के नाम पर स्वयं को नष्ट करता है – गाय रखने की लालसा उसका सांस्कृतिक सपना है, लेकिन वह अंततः उसका पतन बन जाती है।

झुनिया और गोबर के विवाह को सामाजिक मान्यता नहीं मिलती — इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद मूल्यों और कानूनों में भेद की ओर संकेत करते हैं। होरी की आर्थिक दुर्दशा का कारण केवल उसकी निर्धनता नहीं, बल्कि भूमि-व्यवस्था, कर, सूदखोरी, और बाजार का शोषण है। उपन्यास में यह पंक्ति यथार्थवाद का निचोड़ है: "जिस खेत को उसने अपना समझा, वही खेत उसे खा गया।"

निर्मला (१९२६): मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास "निर्मला" हिंदी साहित्य में सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श का अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज है। यह रचना भारतीय समाज में नारी की स्थिति, उसकी सीमाएँ, इच्छाएँ और समाज द्वारा उस पर लादी गई मर्यादाओं को अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत करती है। यह उपन्यास केवल एक व्यक्तिगत कथा न होकर सम्पूर्ण समाज के अंतर्विरोधों का चित्रण है। प्रेमचंद का उपन्यास 'निर्मला' उस दौर में लिखा गया जब भारत में स्त्री-जीवन अनेक बंधनों और कुरीतियों से जकड़ा हुआ था। यह उपन्यास बाल-विवाह, दहेज प्रथा, स्त्री-शोषण, संदेह और सामाजिक अन्याय जैसे विषयों को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है।

निर्मला की कथा एक शिक्षित, सुंदर, और युवा लड़की के इर्द-गिर्द घूमती है जिसकी सगाई एक उपयुक्त युवक से होती है, किंतु पिता की मृत्यु और दहेज की असमर्थता के कारण उसकी शादी एक अधेड़ विधुर व्यक्ति, मुंशी तुलसीराम से कर दी जाती है। इसके बाद न केवल निर्मला का जीवन त्रासद होता है, बल्कि पूरे परिवार में विघटन आरंभ हो जाता है। यह कहानी 1920 के दशक के मध्यवर्गीय समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती है।'निर्मला' न केवल एक स्त्री की व्यथा-कथा है, बल्कि वह समूचे समाज के नैतिक पतन और मानवीय संवेदनाओं के ह्रास की कहानी भी है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने तत्कालीन मध्यवर्गीय समाज की गहरी पड़ताल करते हुए यह दिखाया है कि किस प्रकार पितृसत्तात्मक व्यवस्था और दहेज जैसी कुप्रथाएँ एक स्त्री के जीवन को विनाश की ओर धकेल देती हैं। बेमेल विवाह के माध्यम से समाज में प्रचलित उस व्यवस्था की आलोचना करते हैं, जिसमें कन्या की इच्छा और उपयुक्तता की अवहेलना कर केवल सामाजिक प्रतिष्ठा या

आर्थिक विवशता को आधार बनाकर विवाह संपन्न किया जाता है। तुलसीराम और निर्मला का विवाह इसी सामाजिक दबाव का उदाहरण है।

निर्मला के पिता की मृत्यु के बाद उसका विवाह पहले तय वर से नहीं हो पाता क्योंकि दहेज नहीं दिया जा सकता। यह इस बात का यथार्थ चित्रण है कि किस प्रकार आर्थिक स्थिति कन्या के जीवन को प्रभावित करती है। निर्मला को एक ऐसे पति से विवाह करना पड़ता है जो उसके पिता की उम्र का है। इसके अतिरिक्त उसका सौतेला पुत्र भी उसकी ही उम्र का है, जिससे संबंधों को लेकर परिवार और पति के मन में संदेह उत्पन्न होता है। निर्मला इस संदेह, पीड़ा और आत्मग्लानि के द्वंद्व में जीती है।

सेवासदन (१९१८): हिंदी उपन्यास साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का 'सेवासदन' एक मील का पत्थर माना जाता है। मूलतः उर्दू में 'बाज़ारे-हुस्न' नाम से लिखा गया यह उपन्यास प्रेमचंद का पहला हिंदी उपन्यास है। यह उपन्यास उस समय के समाज में व्याप्त नैतिक, सामाजिक और स्त्री संबंधी संकटों को उजागर करता है। उपन्यास के केंद्र में है 'सुमा' — एक ऐसी स्त्री जो अपनी परिस्थितियों से जूझती हुई वेश्यालय से सेवा कार्य तक का लंबा और चुनौतीपूर्ण सफर तय करती है। नायिका सुमा एक शिक्षित, सुंदर और कुलीन ब्राह्मण कन्या है जिसकी शादी एक बेरुखे, निम्न पदस्थ न्यायालय कर्मचारी गजाधर से कर दी जाती है। पति का व्यवहार कठोर और असंवेदनशील है, जिससे सुमा का दांपत्य जीवन असंतोष और पीड़ा से भर जाता है। सुमा सांसारिक सुख की खोज में घर छोड़ देती है और एक वेश्या के रूप में जीवन बिताने लगती है। अंततः वह आत्मचिंतन और पश्चात्ताप के बाद 'सेवासदन' नामक महिला आश्रय गृह में सेवा कार्य से जीवन की सार्थकता प्राप्त करती है। 'सेवासदन' उपन्यास अपने पात्रों के माध्यम से तत्कालीन समाज की जटिलताओं, स्त्री-जीवन की विडंबनाओं और सामाजिक यथार्थ को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास की नायिका सुमा एक जटिल, परिवर्तनशील और जीवंत पात्र है जो परंपरा, विद्रोह और अंततः आत्मबोध के मार्ग से गुजरती है। वह भारतीय नारी की पीड़ा, संघर्ष और पुनरुत्थान की प्रतीक बनती है। गजाधर बाबू का चरित्र पुरुष वर्चस्व, संकीर्ण मानसिकता और भावनात्मक रिक्तता का प्रतिनिधि है, जो स्त्री को कभी सम्मान नहीं देता।

सेवासदन का अधीक्षक एक संवेदनशील और सुधारवादी पुरुष के रूप में उभरता है जो नारी पुनर्वास का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके अतिरिक्त सुमा के माता-पिता, बहन, और कोठे की अन्य स्त्रियाँ समाज की विभिन्न मानसिकताओं और मजबूरियों को प्रतिबिंबित करते हैं। समाज स्वयं एक पात्र के रूप में उपन्यास में उपस्थित है, जो नारी को बार-बार न्याय और सम्मान से वंचित करता है। इन पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने न केवल समाज का दर्पण प्रस्तुत किया, बल्कि सामाजिक सुधार की संभावना को भी रेखांकित किया। 'सेवासदन' पात्रों की यथार्थपरकता और सामाजिक संदर्भ में उनकी गहराई के कारण आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।

कफन: "कफन" (१९३६) एक छोटी लेकिन अत्यंत मार्मिक रचना है,जिसमें दुख, गरीबी और शोषण की चरम अवस्था का चित्रण है। घीसू और माधव जैसे पात्र सामाजिक तंत्र के ऐसे उपेक्षित प्रतीक हैं जो व्यवस्था की विसंगतियों को बेहद तीखे यथार्थ के साथ करारा व्यंग्य करते हैं। "कफन" की कथा दो गरीब दलित मजदूरों - घीसू और माधव - के इर्द - गिर्द घूमती है,जिसकी बहू (माधव की पत्नी) प्रसव वेदना के मर रही होती हैं। वे इलाज या सहायता करने के बजाय आग के पास बैठकर आलू सेंक रहे होते हैं। उसके मर जाने के बाद वे कफ़न के लिए भींख मांगते हैं, और उस पैसे से शराब पीते हैं। प्रेमचंद ने यहाँ घिसू और माधव जैसे पत्रों के माध्यम से ग़रीबी का नग्न यथार्थ प्रस्तुत किया है। वे इतने गरीब हैं कि न उनके पास

खाने को है, न बीमार बहू के लिए दवा। मजदूरी नहीं करते,क्योंकि काम करने से पहले ही थक जाते हैं - यह अत्यधिक निर्धनता और आत्मसमर्पण की स्थिति को दर्शाता है। घीसू और माधव की संवेदनहीनता यथार्थ की सबसे तीखी अभिव्यक्ति है। उन्होंने अपने बेटे की पत्नी की मृत्यु पर कोई दुःख नहीं जताया,बल्कि कफ़न के नाम पर मिली भीख से शराब पीना उचित समझा। यह भावनात्मक शून्यता और सामाजिक मूल्यहीनता का घोर यथार्थ है। समाज में गरीबों के प्रति उपेक्षा और पाखंड को भी प्रेमचंद ने उजागर किया है। गाॅंव के लोग घिसू और माधव को पैसे इसलिए देते हैं कि उनका कर्तव्य पूरा हो जाए - वास्तव में उन्हें उनके दुःख की परवाह नहीं। यह सामाजिक दिखावे और बनावटी संवेदना की सच्चाई है। "कफ़न" यथार्थ के उस चरम पर पहुॅंचती है जहाँ नैतिकता भी बेमानी हो जाती है। जब इंसान की जिंदगी इतनी अभावग्रस्त हो जाती है कि मौत पर रोटी और शराब भारी पड़ती है, तो वह यथार्थ निराशा और नैतिक पतन का दस्तावेज़ बन जाता है।

कफ़न प्रेमचंद की सबसे अधिक विचारोत्तेजक कहानियों के से एक है,जो यथार्थ के सबसे क्रूर और नग्न रूप को सामने रखती है। यह कहानी बताती है कि गरीबी केवल भौतिक अभाव नहीं,बल्कि भावनात्मक और नैतिक मूल्यों को चूस लेती है। प्रेमचंद का यथार्थ न केवल दर्शाता है,बल्कि पाठक को झकझोरता भी है।

सद्गति: प्रेमचंद हिंदी कथा साहित्य के यथार्थवादी शिल्पी थे। उन्होंने समाज की सच्चाइयों को बिना किसी अलंकरण के प्रस्तुत किया। उसको कहानी "सद्गति" सामाजिक अन्याय , जातिवाद और धार्मिक पाखंड पर करारा प्रहार करती है। यह एक छोटी - सी कहानी होते हुए भी इतनी सशक्त हैं कि पाठक तक झकझोर देती है। 'सद्गति' एक दलित व्यक्ति दुखी चमार की कहानी है जो अपने बीमार बच्ची के लिए तांत्रिक पूजा कराने के उद्देश्य से ब्राह्मण से मिलने जाता है। ब्राह्मण (पंडित घासी) पूजा से पहले दुखी से काम करवाने लगता है – लकड़ी काटना, झाड़ू लगाना आदि। दिनभर बिना भोजन और विश्राम के काम करते-करते दुखी की वहीं मृत्यु हो जाती है। पंडित और उसकी पत्नी शव को छूने से बचते हैं क्योंकि वह अछूत है। अंततः वे शव को घसीटकर गाॅंव के बाहर फेंक देते हैं। कहानी भारतीय समाज में व्याप्त कठोर जाति-व्यवस्था की आलोचना है। दुखी चमार की हैसियत केवल एक 'सेवक' की नहीं, बल्कि 'अछूत' की है। पंडित उस पर दया या सहानुभूति नहीं दिखाता, बल्कि उसका शोषण करता है। यहाँ यथार्थ यह है कि धर्म और पूजा जैसे आध्यात्मिक कार्य भी दलितों के लिए यातना बन जाते हैं। दुखी मेहनत करता है, लेकिन उसके श्रम का कोई मूल्य नहीं है। भूखे-प्यासे, बिना विश्राम के काम करते-करते उसकी मृत्यु हो जाती है। यह दर्शाता है कि समाज में श्रमिक वर्ग की कोई सुरक्षा या संवेदना नहीं है। यह आर्थिक और सामाजिक यथार्थ का प्रतिनिधित्व करता है। कहानी का सबसे मार्मिक और कटु यथार्थ यह है कि एक मनुष्य की मृत्यु के बाद भी उसे सम्मानजनक अंतिम संस्कार नहीं मिलता, सिर्फ इसलिए क्योंकि वह 'नीची जाति' से है। यह भारतीय समाज में मानवीय मूल्यों के क्षरण का कड़वा यथार्थ है। 'सद्गति' में प्रेमचंद भारतीय समाज में व्याप्त कठोर जातिव्यवस्था और छुआछूत के मुद्दे को केंद्र में लाते हैं। दुखी को पूजा-पाठ में शामिल होने की अनुमति नहीं, वह केवल 'सेवा' के योग्य है। यह जातिगत अपमान कथा का केंद्रीय यथार्थ बन जाता है।

"जा, वहीं बैठ जा, हम बुलाएँगे।" – यह वाक्य ब्राह्मणिक अभिजात्य और दलित की 'स्थानहीनता' को दर्शाता है। प्रेमचंद इस सामाजिक असमानता को नारेबाज़ी या प्रत्यक्ष प्रतिरोध के बजाय यथार्थ के ठंडे वर्णन के माध्यम से दर्शाते हैं। पंडित घासी का चरित्र 'धर्म के ठेकेदार' के रूप में सामने आता है। वह धर्म को शुद्ध आध्यात्मिक साधना के बजाय एक सेवा-श्रम की प्रणाली में बदल देता है – जहाँ पंडित को सेवा चाहिए, और निम्न जाति को केवल 'धार्मिक पुण्य' की आस।

“यह चमार है, इसे मंदिर में नहीं आने दूँगा।” – यह संवाद धार्मिक वर्ण-व्यवस्था की सामाजिक राजनीति को प्रकट करता है।

पूस की रात: मुंशी प्रेमचंद के कथा-साहित्य में यथार्थवाद और सामाजिक चेतना के स्वर एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। उन्होंने न केवल भारतीय ग्रामीण समाज की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को उजागर किया, बल्कि उनमें छिपी मानवीय त्रासदियों और विडंबनाओं को भी साहित्यिक संवेदना के साथ प्रस्तुत किया। ‘पूस की रात’ ऐसी ही एक कहानी है, जिसमें भारतीय किसान की विषम परिस्थितियों, प्राकृतिक प्रतिकूलताओं और सामाजिक असंवेदनशीलता को यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। मुख्य पात्र हल्कू एक गरीब किसान है जो सर्दियों की पूस की रात में खेत की रखवाली करने के लिए मजबूर होता है। उसकी पत्नी मुन्नी चाहती है कि वह कम्बल खरीदे, परंतु हल्कू को ज़मींदार का पिछला कर्ज चुकाना पड़ता है। रात में सर्दी से कांपता हल्कू खेत में आग जलाकर सो जाता है और जानवर खेत बर्बाद कर जाते हैं। सुबह जब वह मुन्नी से कहता है कि अब वह "मज़दूरी करेगा", तो उसमें एक अजीब-सी राहत दिखती है – जैसे खेती से मुक्ति ही उसका सच्चा ‘मोक्ष’ है। कहानी का सबसे बड़ा यथार्थ यह है कि किसान होना कोई गौरव नहीं, बल्कि अभिशाप है। हल्कू खेती करता है, पर वह कर्ज में डूबा है; वह रात में खेत की रखवाली करता है, पर न तो वस्त्र हैं न भोजन। यह "उत्पादन के साधनों से वंचित कृषक" की त्रासदी है।

“तीसरे पहर हल्कू ने आग बुझा दी और पत्तियों को बटोर कर घास के ढेर पर बिछाया और उस पर चादर डालकर लेट गया।”

- यह दृश्य नायक के ‘मनुष्य’ से ‘जानवर’ में बदलने का प्रतीक है।
  हल्कू को अपनी मेहनत की उपज से पहले ज़मींदार का कर्ज चुकाना होता है। किसान अपना उत्पादन स्वयं उपभोग नहीं कर सकता – यह मार्क्सवादी शोषण का प्रत्यक्ष उदाहरण है। प्रेमचंद यहाँ आर्थिक शोषण को नैतिकता के आवरण के बिना, यथार्थ के कठोर स्वरूप में प्रस्तुत करते हैं। हल्कू का शत्रु यहाँ केवल सामाजिक ढाँचा नहीं, बल्कि प्रकृति भी है – "पूस की रात" की ठंड, बर्फ-सी हवा, कुत्तों का न आना, और जानवरों का आक्रमण – सब मिलकर उसे हराते हैं। प्रकृति और व्यवस्था – दोनों उसके विरुद्ध खड़े हैं। हल्कू की प्रतिक्रिया – "अब खेती नहीं करूँगा, मजूरी करूँगा" – कोई विद्रोह नहीं, बल्कि दुख की सीमा पार करने के बाद प्राप्त हुई निर्वेद की अवस्था है। यह यथार्थ जीवन की उस स्थिति का चित्र है जब मनुष्य दुःख का आदी हो जाता है। कहानी में हल्कू और उसका कुत्ता जब एक-दूसरे की गर्मी ढूँढते हैं, तब दृश्य हास्यास्पद लगता है, परंतु उसके पीछे गहरी मानवीय विडंबना छुपी है। यह प्रेमचंद की कलात्मक यथार्थवादी शैली की विशिष्टता है – जहाँ हँसी भी रुला देती है। ‘पूस की रात’ एक ऐसा यथार्थवादी आख्यान है जो किसानों की सामाजिक, आर्थिक और प्राकृतिक त्रासदियों को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करता है। प्रेमचंद ने न तो क्रांतिकारी भाषा का प्रयोग किया, न आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किया – उन्होंने केवल जीवन को जैसा है, वैसा दिखा दिया। यही प्रेमचंद की साहित्यिक महानता और यथार्थ दृष्टि की सफलता है।
- **ईदगाह:** मुंशी प्रेमचंद हिंदी कथा साहित्य के वे शिल्पी हैं, जिन्होंने अपने लेखन में भारतीय समाज की जटिलताओं, विषमताओं और करुणाओं को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया। उनकी कहानी ‘ईदगाह’ बाल-संवेदना, पारिवारिक प्रेम और सामाजिक विषमता के साथ-साथ भारतीय समाज की मूल्य-व्यवस्था को अत्यंत प्रभावशाली रूप में चित्रित करती है। यह एक ऐसी कहानी है, जो एक छोटे बालक के माध्यम से मनुष्य की करुणा, त्याग, और यथार्थ का ऐसा चित्र प्रस्तुत करती है, जो किसी भी काल, समाज या संस्कृति के लिए सार्वकालिक बन जाता है।

कहानी का नायक हामिद एक निर्धन बालक है, जो अपनी दादी अम्मा के साथ रहता है। ईद के दिन वह मेलों में जाने वाले बच्चों के साथ जाता है। जबकि अन्य बच्चे खिलौने, मिठाइयाँ, और झूले का आनंद लेते हैं, हामिद अपनी तीन पैसे की जमा पूंजी से एक जोड़ी चिमटे खरीदता है – ताकि उसकी दादी को रोटियाँ बनाते समय जलना न पड़े। लौटते हुए, वह उन बच्चों का उपहास भी झेलता है, पर अंततः उसका त्याग और भावनात्मक समझ सबसे ऊपर सिद्ध होती है। कहानी का परिवेश निर्धनता, अभाव और संघर्ष का है। हामिद के माता-पिता नहीं हैं, दादी मुश्किल से उसे पाल रही है, और हामिद केवल तीन पैसे लेकर मेले जाता है। यह आर्थिक विषमता का स्पष्ट यथार्थ है। जहां दूसरे बच्चे खिलौनों और मिठाइयों में डूबे हैं, हामिद का संसार 'दादी की पीड़ा' है।

— “वह अभी केवल चार-पाँच साल का है, और ऐसा समझदार, ऐसा होशियार बालक है!”— यह यथार्थ है उस वर्ग का जहाँ बचपन जल्दी बड़ा हो जाता है। हामिद का चिमटा खरीदना उस भावनात्मक यथार्थ को दर्शाता है जहाँ एक बालक अपनी खुशी को त्याग कर अपने प्रियजन की पीड़ा को प्राथमिकता देता है। यह ‘भारतीय पारिवारिक मूल्य’ का श्रेष्ठ उदाहरण है। अन्य बालक जो धनिक परिवारों से आते हैं, उनका हँसना और हामिद का तर्क देना एक वर्गीय टकराव को भी उजागर करता है – लेकिन यहाँ प्रेमचंद क्रांति नहीं, बल्कि नैतिक विजय को प्राथमिकता देते हैं। “अब हामिद का चिमटा खिलौनों पर भारी था।” यह मूल्य-प्रतिस्थापन है – जहाँ उपभोक्तावादी खिलौनों की तुलना में एक साधारण चिमटा एक गहरी संवेदना और मूल्य का प्रतीक बन जाता है।

— प्रेमचंद ने हामिद के मन को अत्यंत सूक्ष्मता से पकड़ा है। वह दादी की अंगुलियाँ जलती हैं – यह एक सामान्य बालक की सोच नहीं, एक समाज-संवेदनशील बालक का चिंतन है। चिमटा कहानी का प्रतीक है – त्याग, सेवा, और करुणा का। प्रेमचंद इसे प्रतीक बनाते हैं, पर बिना बौद्धिकता या दार्शनिकता के – केवल यथार्थ के सरल चित्रण से।‘ईदगाह’ प्रेमचंद की यथार्थवादी दृष्टि की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है – जहाँ जीवन की सबसे छोटी घटना भी महान मानवीय मूल्य का प्रतीक बन जाती है। यह कहानी बाल मन, निर्धनता, परिवार, और करुणा के बीच मानवीय यथार्थ को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती है। प्रेमचंद यहाँ किसी विचारधारा के लेखक नहीं, बल्कि एक मनुष्य के लेखक बन जाते हैं।

भाषा और शैली: प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज, और जनसामान्य की भाषा है। उन्होंने आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग किया, जिससे पाठक को पात्र और घटनाएँ अपनी सी लगती हैं। उनकी शैली विश्लेषणात्मक, मार्मिक और व्यंग्यात्मक है – जो पाठक के मन में गहरा असर छोड़ती है। उनकी भाषा-शैली को समझने के लिए हमें उनके सामाजिक दृष्टिकोण, यथार्थवादी लेखन और जनमानस से जुड़ाव को ध्यान में रखना होगा।

उन्होंने खड़ी बोली हिंदी और उर्दू दोनों का संतुलित प्रयोग किया, जिससे आम पाठक उनसे जुड़ सका। उनकी भाषा में लोकप्रचलित शब्द, कहावतें, और मुहावरे भरपूर मात्रा में मिलते हैं।

उदाहरण: "ईदगाह" में हामिद की दादी कहती है— "लू लग जाएगी, छाँह में बैठ, दो घड़ी दिन तो चढ़े!" — यह भाषा सीधे दिल से संवाद करती है। कहानियों और उपन्यासों में संवाद बहुत ही स्वाभाविक, जीवंत और पात्र के चरित्र के अनुसार होते हैं। वे संवाद के माध्यम से पात्रों की मानसिकता, वर्ग, समाज और स्थिति को दर्शाते हैं।

उदाहरण: "गोदान" में होरी और धनिया के संवादों से किसान-जीवन की सच्चाई सामने आती है। प्रेमचंद ने यथार्थ को व्यक्त करने के लिए शब्दों का ऐसा चयन किया जिससे दृश्य पाठक के सामने सजीव हो जाता है। उनकी भाषा वर्णनात्मक होने के बावजूद कहीं भी कृत्रिम नहीं लगती।

उदाहरण: "पूस की रात" में हल्कू की ठिठुरन का वर्णन बहुत ही यथार्थवादी और सजीव भाषा में किया गया है।

निष्कर्ष: मुंशी प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य को जिस यथार्थवादी धरातल पर स्थापित किया, वह आज भी साहित्यिक दृष्टि से अनुकरणीय और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। उन्होंने साहित्य को न केवल मनोरंजन का साधन माना, बल्कि उसे समाज सुधार और जनचेतना का सशक्त माध्यम भी बनाया। उनके कथा-साहित्य में भारतीय समाज की जटिलताओं, विषमताओं और विडंबनाओं को गहरी संवेदनशीलता और गहन अंतर्दृष्टि के साथ प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचंद के पात्र आम जनजीवन से जुड़े हुए हैं — किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, ब्राह्मण, व्यापारी, अधिकारी — सभी उनके कथा संसार में स्थान पाते हैं। इन पात्रों के माध्यम से वे सामाजिक संरचना के विभिन्न पहलुओं, जैसे– जातिवाद,वर्गभेद,स्त्रीशोषण,सामंतवाद, पूँजीवाद,धार्मिक पाखंड और शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों को उजागर करते हैं।

सन्दर्भ सूची :

1. तुलसीराम – मणिकर्णिका: नारी विमर्श के संदर्भ में
2. रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास
3. प्रेमचंद, मुंशी. सद्गति. (प्रथम प्रकाशन: 1931)
4. सिंह, रमेश. प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि. दिल्ली: साहित्य भवन, 2005
5. वाल्मीकि, ओमप्रकाश. जूठन. राधाकृष्ण प्रकाशन, 1997
6. मिश्रा, हरिशंकर. हिंदी कहानी और यथार्थवाद. वाणी प्रकाशन, दिल्ली 2010.
7. आलोक राय. Premchand and the Discourses of Progressivism. Delhi: Oxford University Press, 2002
8. प्रेमचंद, मुंशी. मानसरोवर भाग-4, पृष्ठ: 12-17
9. द्विवेदी, रामविलास. हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा
10. मिश्रा, हरिशंकर परसाई. साहित्य और समाज, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली
11. पांडेय, रामचंद्र. प्रेमचंद और भारतीय कृषक चेतना, वाणी प्रकाशन,दिल्ली
12. प्रेमचंद, मुंशी. ईदगाह, संग्रह: मानसरोवर भाग-1
13. शुक्ल, नामवर. कहानी: विचार और रूप, राजकमल प्रकाशन,दिल्ली
14. पांडेय, रामचंद्र. प्रेमचंद और सामाजिक यथार्थ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
15. गौतम, लक्ष्मीनारायण. बाल-साहित्य और बाल-मनोविज्ञान, प्रकाशन विभाग
16. https://www.hindisamay.com – प्रेमचंद की कहानियाँ और लेख.